नईदुनिया

305 साल बाद भी दफन 1170 करोड़ का खजाना का रहस्य

लंदन

छोटा सा देश सेशेल्स के माहे द्वीप पर लगभग 1170 करोड़ रुपये का एक खजाना दफन माना जाता है, जो बीते 305 सालों से किसी की भी पहुंच से दूर है। इस खजाने का रहस्य 305 साल बाद भी अनसुलझा है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा समुद्री डाकू खजाना और खजाने का होली ग्रेल कहा जाता है, जिसकी कहानियां सदियों से सेशेल्स और रियूनियन आइलैंड के लोगों को रोमांचित करती रही हैं। यह रोमांचक कहानी 18वीं सदी के एक खूंखार फ्रांसीसी समुद्री डाकू ओलिवियर लेवासेर से जुड़ी है, जिसे उसकी तेज हमला करने की रणनीति के लिए जाना जाता था। उसकी समुद्री डकैती का दौर 1716 के आसपास शुरू हुआ और 1721 में चरम पर पहुंच गया। इसी साल, लेवासेर और उसके 750 साथियों ने रियूनियन आइलैंड के बंदरगाह पर लंगर डाले पुर्तगाली जहाज नोसा सेन्होरा दो काबो पर हमला किया। डाकुओं ने पूरे दल को मौत के घाट उतार दिया और जब उन्होंने जहाज के भीतर कदम रखा, तो उनकी आँखें फटी की फटी रह गईं। वह जहाज सोने-चांदी की छड़ों, कीमती पत्थरों, अनकट हीरों, सोने के गिन्नी, चर्च की प्लेट्स, प्यालों और अन्य अनमोल वस्तुओं से भरा एक तैरता हुआ खजाना घर था। लेवासेर ने इस विशाल लूट का कुछ हिस्सा मेडागास्कर में अपने साथियों के साथ बांटा, जिसमें हर साधारण डाकू को 42 हीरे और 5000 सोने के गिन्नी मिले। लेकिन सबसे बड़ा और कीमती हिस्सा लेवासेर ने अपने पास रखा और उसे सेशेल्स के माहे द्वीप पर छिपाने का फैसला किया।

बताया जाता है कि उसने खजाने को 20-20 के समूहों में बांटकर पहले एक गुफा में रखा। बाद में, जब इसे असली जगह पर दफनाया गया, तो इस गुप्त अभियान में शामिल सभी चुनिंदा साथियों को मार दिया गया, ताकि खजाने का राज हमेशा के लिए दफन रहे। इस तरह, केवल लेवासेर ही वह शख्स था जिसे इसकी असली जगह का पता था। हालांकि, लेवासेर का अंत भी करीब आ गया था। 1730 में, जब उसे पकड़कर फांसी दी जा रही थी, तो उसने भीड़ में अपने पुराने साथियों को देखा और हवा में एक पुराना चर्मपत्र फेंकते हुए चिल्लाया, मेरा खजाना उस व्यक्ति को जो इसे समझ सके। यह चर्मपत्र असल में एक क्रिप्टोग्राम यानी एक कोडित नक्शा था, जिसमें 17 जटिल पंक्तियाँ थीं। ब्रिटिश म्यूजियम ने बाद में पुष्टि की कि यह 18वीं सदी का एक प्रामाणिक चर्मपत्र था। लेवासेर ग्रीक, लैटिन और मेसोनिक प्रतीकों का एक विद्वान जानकार था, और उसने वाकई एक अत्यंत जटिल कोड बनाया था। इस रहस्यमयी खजाने की तलाश में एक ब्रिटिश परिवार की दो पीढ़ियां अपनी पूरी जिंदगी लगा चुकी हैं। रेजिनाल्ड हर्बर्ट क्रूज-विल्किंस, जिन्हें स्थानीय लोग ट्रेजर मैन के नाम से जानते थे, ने 27 साल तक इस खजाने की खोज की। 1977 में उनकी मृत्यु के बाद, उनके बेटे जान क्रूज-विल्किंस ने इस विरासत को संभाला।

न्यूज ब्रीफ

राइफल अब गिराएगी ड्रोनः रूस का म्नोगोटोचिये कारतूस

मास्को। रूस की सरकारी डिफेंस कंपनी रोस्टेक ने एके सीरीज की राइफलों के लिए एक नया म्नोगोटोचिये कारतूस तैयार किया है। कंपनी का दावा है कि यह कारतूस छोटे मानवरहित हवाई वाहनों (यूएवीएस) या ड्रोनों को निशाना बनाने की सैनिकों की क्षमता को 2.5 गुना तक बढ़ा सकता है। यह नई गोली मौजूदा एके राइफलों में इस्तेमाल की जा सकेगी और लगभग 300 मीटर की दूरी तक छोटे ड्रोन के खिलाफ प्रभावी रहेगी। म्नोगोटोचिये कारतूस की सबसे बड़ी खासियत इसकी अनूठी डिजाइन है। रोस्टेक के अनुसार, यह गोली राइफल के बैरल से बाहर निकलने के बाद तीन अलग-अलग प्रोजेक्टाइल में बंट जाती है। इस फैलाव से गोली का क्षेत्र बढ़ जाता है, जिससे तेजी से उड़ रहे छोटे ड्रोन को निशाना बनाने और गिराने की संभावना काफी बढ़ जाती है। कंपनी का दावा है कि यह तकनीक छोटे यूवीए के खिलाफ करीब 2.5 गुना बेहतर असर दिखा सकती है। इस कारतूस को इस तरह तैयार किया है कि इसके उपयोग के लिए नई राइफल खरीदने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। यह 5.45म39 मिमी और 7.62म54 मिमी कारतूस केस का उपयोग करता है, जो पहले से ही रूसी सेना के हथियारों में व्यापक रूप से इस्तेमाल किए जाते हैं। इससे सेना अपनी मौजूदा एके सीरीज की राइफलों के साथ ही इस नए और प्रभावी कारतूस का आसानी से इस्तेमाल कर सकेगी, जिससे लागत और प्रशिक्षण का बोझ कम होगा। रूस-यूक्रेन युद्ध सहित आधुनिक संघर्षों में छोटे ड्रोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। निगरानी, हमला करने और विस्फोटक पहुंचाने जैसे मिशनों में इनका बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है, जिससे पारंपरिक सैन्य रणनीतियों को चुनौती मिल रही है। इसी वजह से दुनिया के कई देश, महंगे एयर डिफेंस सिस्टम के साथ-साथ ऐसे प्रभावी हथियार भी विकसित कर रहे हैं, जिनसे सामान्य सैनिक भी कम लागत में ड्रोन का मुकाबला कर सकें। फिलहाल, रोस्टेक ने इस कारतूस की क्षमताओं को लेकर ये दावे किए हैं, हालांकि अभी तक किसी स्वतंत्र एजेंसी ने इन दावों की पुष्टि नहीं की है। इसके बावजूद, यह स्पष्ट है कि बढ़ते ड्रोन खतरे का मुकाबला करने के लिए पारंपरिक हथियारों को नई तकनीकों के साथ उन्नत करने के वैश्विक प्रयास तेज हो गए हैं।

भारत-नेपाल बार्डर पर नहीं चलती बालेन शाह की सरकार, जनता ने रिकार्ड तोड़ खरीदी से सरकार के होश उड़ाए

काठमांडू। जब कोई सरकार अपनी जनता पर अत्यधिक नियम थोपती है, तो जनता अक्सर इसका

प्रभावी इलाज ढूंढ लेती है। नेपाल में इसका एक अद्भुत उदाहरण देखने को मिला, जहाँ भारत-नेपाल सीमा पर प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह की सरकार का कड़ा कस्टम ड्यूटी का नियम भी बेअसर साबित हुआ। नेपाल सरकार ने यह सोचा था कि सीमा शुल्क के डर से वह अपने नागरिकों को भारत जाकर खरीदारी करने से रोक पाएगी, लेकिन जनता ने इस पाबंदी की ऐसी धज्जियाँ उड़ाई हैं कि नए आंकड़ों ने बड़े-बड़े अधिकारियों को भी हैरान कर दिया है। नेपाल के नेशनल स्टैटिस्टिक्स आफिस (एनएसओ) के नवीनतम सर्वेक्षण ने एक ऐसा सच उजागर किया है, जिसने सीमा पर प्रतिबंध लगाने वालों के होश उड़ा दिए हैं। एनएसओ के सर्वेक्षण से पता चला है कि नेपाल से बाहर जाने वाले पर्यटन का मुख्य कारण सीमा-पार खरीदारी है, खासकर नेपाल-भारत सीमा के पास।

क्या महिला मेयर मेटरनिटी लीव भी नहीं ले सकती है, जापान में छिडी बहस

टोक्यो। क्या जापान में महिला मेयर होना अपराध है क्या यहां महिला मेयर मेटरनिटी लीव भी नहीं ले सकती है ऐसे सवालों को लेकर इन दिनों जापान में बहस छिडी हुई है। मेयर शोको कवाता देश की पहली ऐसी मेयर बनने जा रही हैं जो मातृत्व अवकाश पर जा रही हैं। ऐसे में पुरुषों में अजीब बहस शुरू हो गई है। अगर कोई महिला सामाजिक जिम्मेदारियों से घिरे ओहदे पर रहती है तो भी उसको गरिमा और हक के साथ बच्चे पैदा करने और उन्हें पालने का अधिकार होना चाहिए। लेकिन जापान के इस शहर में हुई घटना ने पूरी दुनिया के सामने फिर से मातृत्व को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक शोको कवाता जापान के यवाता शहर की मेयर हैं। वह देश की पहली मेयर बनने जा रही हैं जो मातृत्व अवकाश लेंगी। लेकिन इस फैसले से जापान के कुछ पुरुष नाराज हो गए हैं। उनका कहना है कि वह अपनी निजी जिंदगी को जनता की जिम्मेदारियों से ऊपर रख रही हैं। 38 वर्षीय शोको कवाता पिछले अगस्त में मेयर चुनी गई थीं। कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि वह गर्भवती हैं। उनका बच्चा जनवरी में पैदा होने वाला है, इसलिए उन्होंने दो महीने की मातृत्व छुट्टी लेने का फैसला किया है। उनके इस फैसले का कई लोगों ने समर्थन किया, लेकिन सोशल मीडिया पर कुछ लोगों ने आलोचना भी की। वहीं कुछ पुरुषों ने कहा कि मेयर बनने के बाद उन्हें इतनी जल्दी बच्चा पैदा नहीं करना चाहिए था।

यूक्रेन का रूस पर फिर बड़ा ड्रोन हमला, सेंट पीटर्सबर्ग में तेल रिफाइनरी और सैन्य ठिकानों को बनाया निशाना

मास्को/कीव

यूक्रेन ने बीती रात रूस पर एक और बड़ा ड्रोन हमला किया। एक साथ सैकड़ों ड्रोन छोड़े। यूक्रेन ने सेंट पीटर्सबर्ग के पास तेल रिफाइनरी और सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया। रूस के रक्षा मंत्रालय ने माना कि इस हमले में करीब 500 ड्रोन शामिल रहे। यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने एक्स पर इस हमले का एक वीडियो भी जारी किया। इसमें सेंट पीटर्सबर्ग के बंदरगाह पर मौजूद एक तेल सुविधा केंद्र से धुएं का बड़ा गुबार उठता दिखाई दे रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, राष्ट्रपति जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन ने सेंट पीटर्सबर्ग बंदरगाह पर तेल सुविधा केंद्र के साथ-साथ क्रोनस्टेड नौसैनिक अड्डे के आसपास सैन्य ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमला किया है। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस हमले में लगभग लंबी दूरी के 500 ड्रोन शामिल रहे। मास्को के मेयर ने कहा कि 200 ड्रोन ने रूस की राजधानी को निशाना बनाया। यूक्रेन अब रूस के अंदर तक तेल रिफाइनरी और इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ रक्षा उद्योग केंद्रों पर लगभग रोजाना सफलतापूर्वक हमले कर रहा है। हमलों में वह लंबी दूरी के ड्रोन का प्रयोग कर रहा है।

रिपोर्ट के अनुसार, यूक्रेन के हमलों के बाद रूस के कई इलाकों में ईंधन की कमी हो गई है। लोग गैस स्टेशनों पर लंबी लाइनों में इंतजार करते हुए खुद के वीडियो बना रहे हैं। साथ ही, युद्ध के मैदान में रूस की मुश्किलें बढ़ती हुई दिख रही हैं। मध्यम दूरी के ड्रोन का इस्तेमाल करके यूक्रेन का तेजी से असरदार होता अभियान रूस के लाजिस्टिक्स को निशाना बना रहा है और कब्जे वाले क्रीमिया में आपूर्ति लाइनों को बाधित करने की कोशिश कर रहा है। क्रीमिया में अधिकारियों ने ईंधन की कमी के कारण इमरजेंसी की स्थिति घोषित कर दी है और यूक्रेनी हमलों के कारण बिजली कटौती के बीच कर्फ्यू लगा दिया है।

इस बीच, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने रात में वर्दी पहनकर एक सैन्य ठिकाने का दौरा किया। रूस की सेना ने शनिवार को दावा किया कि उसने यूक्रेन के पूर्वी डोनबास क्षेत्र में एक अहम रक्षा केंद्र कोस्टियान्टिनिव्का शहर पर कब्जा कर लिया है। अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का कहना है कि अगर यह दावा सच है तो इसे रूस के लिए बड़ी सफलता कहा जा सकता है। यह इस साल मास्को की युद्ध के मैदान में पहली बड़ी सफलता होगी।

पोलैंड के रक्षा विश्लेषक और रोचन कंसल्टिंग के निदेशक कानराड मुजिका के अनुसार, रूस बहुत धीमी गति से आगे बढ़ रहा है और हो सकता है कि मई में उसने जितना इलाका हासिल किया, उससे ज्यादा इलाका कुल मिलाकर गंवा दिया हो। स्वतंत्र समीक्षकों और पश्चिमी देशों की इंटेलिजेंस रिपोर्ट के मुताबिक, इस लड़ाई में रूसी सेना को भारी कीमत चुकानी पड़ी है।

नेपाल में हाथी ने ली मां बेटे की जान, अब तक 25 लोगों को उतार चुका है मौत के घाट

काठमांडू

नेपाल के चितवन जिले में जंगली हाथी ध्रुवे के हमले में एक महिला और उसके चार वर्षीय बेटे की मौत हो गई। जिला प्रहरी कार्यालय के सूचना अधिकारी चन्द्रभूषण यादव के अनुसार, ध्रुवे ने 21 वर्षीय आशिका बोटे और उनके चार वर्षीय बेटे भरत बोटे पर घर पर सोते समय हमला किया। हमले में दोनों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

जिला प्रहरी कार्यालय के सूचना अधिकारी यादव के अनुसार, हाथी को भगाने के प्रयास में आशिका के पति पूर्ण बोटे ने आग जलाई, लेकिन इस कवायद में उनका फूस का घर भी जलकर राख हो गया। पुलिस और स्थानीय लोगों की सहायता से आग पर काबू पाया गया।

भरतपुर महानगरपालिका-23 के वार्ड अध्यक्ष दीपक दवाड़ी ने घटना की पुष्टि की है। इस घटना के साथ ही ध्रुवे के हमलों में जान गंवाने वालों की संख्या 25 हो गई है। वर्ष 2018 में नेपाली सेना के एक मेजर की हत्या करने के लगभग नौ वर्ष बाद ध्रुवे ने फिर दो लोगों की जान ली है। स्थानीय लोगों के अनुसार, ध्रुवे अधिकतर चितवन राष्ट्रीय निकुञ्ज के सुखीभार क्षेत्र में रहता है। कभी-कभी अचानक बस्तियों और मेघौली क्षेत्र की ओर भी निकल आता है।

ध्रुवे ने वर्ष 2010 से इंसानों पर हमले शुरू किए। चितवन के माडी क्षेत्र में उसका आतंक काफी अधिक रहा। उसे मारने के लिए करीब 16 लाख नेपाली रुपये खर्च किए गए, लेकिन सेना की गोली से बचकर वह भाग निकला और लगभग पांच वर्ष तक लापता रहा। बाद में वह फिर सुखीभार क्षेत्र में दिखाई देने लगा। वन्यजीव प्रबंधन के तहत ध्रुवे के गले में कई बार रेडियो कालर लगाया गया और उसके दांत भी काटे गए। उसे बेहोश कर ट्रैकिंग उपकरण लगाया गया तथा उसके आक्रामक व्यवहार को कम करने के लिए दवाइयां भी दी गईं। हाल के महीनों में शांत दिखाई देने वाला ध्रुवे कुछ समय पहले सौराहा क्षेत्र में जंगली हाथी रोनाल्डो से भिड़ गया था। संघर्ष में हारने के बाद वह फिर सुखीभार क्षेत्र में अन्य मादा हाथियों के साथ रहने लगा। चितवन राष्ट्रीय निकुञ्ज में रोनाल्डो, गोविन्दे और ध्रुवे जैसे कई जंगली नर हाथी मौजूद हैं।

खुदाई में निकला द्वितीय विश्व युद्ध का 250 किलो वजनी जिंदा बम

बर्लिन। सुबह का वक्त था और लोग रोज की तरह अपने काम पर जाने की तैयारी कर रहे थे। कोई ट्रेन पकड़ने के लिए स्टेशन की ओर बढ़ रहा था तो कोई दफ्तर जाने की जल्दी में था। तभी अचानक पूरे इलाके में एक चेतावनी गूंजी। लोगों से कहा गया कि वे तुरंत अपने घर और आसपास का इलाका खाली कर दें। ये सुनते ही अफरा-तफरी मच गई और कुछ ही देर में सड़कों पर पुलिस, दमकल और राहत दलों की गाड़ियां दौड़ने लगीं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यह घटना जर्मनी के पाट्सडैम शहर की है, जहां निर्माण कार्य के दौरान जमीन के नीचे से द्वितीय विश्व युद्ध का 250 किलोग्राम वजनी जिंदा बम मिला। यह वही बम था, जो करीब 81 साल पहले युद्ध में गिराया गया था, लेकिन फटा नहीं। इतने साल बाद भी यह उतना ही खतरनाक था जितना उस दिन था, जब इसे गिराया गया था। बम मिलने के बाद प्रशासन ने कोई जोखिम नहीं लिया। करीब 6500 लोगों को तुरंत सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया। एक वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों को भी सुबह-सुबह बाहर निकालना पड़ा। इतना ही नहीं, शहर का सेंट्रल रेलवे स्टेशन, सरकारी दफ्तर, संसद भवन, बैंक और मशहूर बारबेरीनी संग्रहालय भी सुरक्षा के लिए बंद कर दिए गए। अधिकारियों ने बम मिलने वाली जगह के चारों ओर करीब 700 मीटर का सुरक्षा घेरा बना दिया।

महिला के दिमाग में मिले 38 परजीवी, वर्षों तक झेलीं मिर्गी और मानसिक बीमारी की पीड़ा

लंदन

लंदन से एक महिला ने दावा किया है कि भारत यात्रा के कुछ समय बाद वह एक दुर्लभ परजीवी संक्रमण की शिकार हो गईं, जिसके कारण उनके मस्तिष्क में 38 परजीवी पाए गए। इस गंभीर बीमारी ने उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति को इस हद तक प्रभावित किया कि उन्हें मिर्गी के दौरे पड़ने लगे और लंबे समय तक मानसिक विकारों से जूझना पड़ा। हालांकि, विशेषज्ञों का कहना है कि इस संक्रमण का संबंध सीधे किसी देश विशेष से नहीं जोड़ा जा सकता, बल्कि यह दूषित भोजन या पानी के माध्यम से फैलने वाली बीमारी है। यह एक महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण है जो किसी भी तरह की गलतफहमी को दूर करता है।

महिला लौरी ने बताया कि भारत यात्रा के दौरान उन्होंने पूरी तरह शाकाहारी भोजन ही किया था ताकि फूड पाइजनिंग या अन्य संक्रमण से बचा जा सके। इसके बावजूद, कुछ समय बाद उन्हें शौच के दौरान शरीर से लगभग एक मीटर लंबा टेपवर्म निकलता दिखाई दिया। उस समय उन्होंने इसे सामान्य घटना समझकर नजरअंदाज कर दिया, लेकिन बाद में उन्हें तेज सिरदर्द, बोलने में कठिनाई और मिर्गी जैसे दौरे पड़ने लगे। अस्पताल में सीएटी और एमआरआई जांच के बाद चिकित्सकों ने पाया कि उनके मस्तिष्क में 38 जीवित परजीवी मौजूद हैं। आगे की जांच में पुष्टि हुई कि उन्हें न्यूरोसिस्टिसिरकोसिस नामक बीमारी है। यह संक्रमण टेपवर्म के अंडों के शरीर में प्रवेश करने और उनके मस्तिष्क तक पहुंचने से होता है। चिकित्सकों के अनुसार, संक्रमण दूषित भोजन, पानी या ठीक से साफ न की गई खाद्य सामग्री के माध्यम से भी फैल सकता है।

बीमारी के चलते लौरी को गंभीर मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। उन्हें पैरानायड साइकोसिस, घबराहट और पैनिक अटैक होने लगे, जिससे उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। कई बार उनका व्यवहार छोटे बच्चे जैसा हो जाता था, और परिवार के सदस्यों के अनुसार, वह कभी फर्श पर घुटनों के बल चलने लगती थीं तो कभी यह मान बैठती थीं कि पुलिस उनका पीछा कर रही है। उनकी स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि उन्हें कई सप्ताह तक न्यूरोसाइकियाट्रिक अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। लंबे इलाज, स्टेरायड और मिर्गी रोधी दवाओं के बाद उनकी हालत धीरे-धीरे सुधरने लगी।

ईरानी राष्ट्रपति का मुस्लिम देशों से एकजुट होने का आह्वान

तेहरान

ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान ने कहा है कि इस्लामी क्रांति के शहीद नेता अयातुल्ला सैयद अली खामेनेई का मार्गदर्शन दुनिया भर के देशों को प्रेरित करता रहेगा। उन्होंने कहा कि एकता, सम्मान, आजादी और प्रतिरोध का संदेश अब पहले से कहीं ज्यादा मजबूती से गूंज रहा है। राष्ट्रपति ने सभी मुस्लिम देशों से एकजुट होने का आह्वान किया।

इरना की रिपोर्ट के अनुसार, तेहरान में शनिवार को राष्ट्रपति ने मुस्लिम देशों से एकता का आह्वान इमाम खामेनेई: प्रतिरोध के अमर नेता विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के संबोधन में किया। पेजेश्कियान ने इस्लामी क्रांति के शहीद नेता की स्मृति में आयोजित समारोह में शामिल होने वाले घरेलू और विदेशी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह सभा मुस्लिम जगत में एकजुटता को मजबूत करेगी और वैश्विक अहंकार की हिंसा, आतंकवाद और

वर्चस्व की नीतियों के खिलाफ ज्यादा सहयोग को बढ़ावा देगी।

ईरानी राष्ट्रपति ने अयातुल्ला खामेनेई की शहादत का जिक्र करते हुए इस घटना को दुखद और अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त नेताओं के मार्ग आदर्श और संदेश उनकी शहादत के साथ खत्म नहीं होते। वे बने रहते हैं और आने वाली पीढ़ियों को न्याय, सच्चाई और प्रतिरोध के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि खामेनेई के मार्गदर्शन ने ईरान की सीमाओं से परे लोगों को प्रेरित किया है।

उन्होंने कहा कि आज इस्लामी क्रांति के शहीद नेता के मार्गदर्शन की बदौलत एकता, सम्मान, आजादी और प्रतिरोध का संदेश विभिन्न धर्मों के देशों और अनुयायियों के बीच गूंज रहा है। राष्ट्रपति ने इस्लामी एकता को राजनीतिक नारे के बजाय एक रणनीतिक जरूरत बताया। उन्होंने तर्क दिया कि मुसलमानों का एक ही ईश्वर, एक ही पैगंबर और एक ही पवित्र ग्रंथ है और उन्हें सांप्रदायिक या राजनीतिक मतभेदों को खुद को बांटने नहीं देना चाहिए।

राष्ट्रपति ने कहा कि इस्लामी समाज की नींव भाईचारे और मेल-मिलाप पर टिकी है। उन्होंने जोर दिया कि एकता ऐतिहासिक रूप से मुसलमानों की ताकत का स्रोत रही है। उन्होंने कहा कि अगर मुस्लिम देश मिलकर काम करें, तो गाजा, लेबनान और फिलिस्तीन जैसी जगहों पर संघर्ष और मानवीय संकट बेरोकटोक जारी नहीं रह सकते। उन्होंने चेतावनी दी कि इस्लामी समूहों के बीच बंटवारा बाहरी ताकतों को क्षेत्रीय तनाव का फायदा उठाने का मौका देता है।

उन्होंने इजराइली शासन के अत्याचारों और उन्हें अमेरिका के समर्थन की भी निंदा की। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र बुद्धिजीवियों, वैज्ञानिकों और अन्य प्रभावशाली हस्तियों की लक्षित हत्याओं का गवाह बन रहा है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की चुप्पी पर भी सवाल उठाए और कहा कि मानवाधिकारों की रक्षा का दावा करने के बावजूद वे ऐसी कार्रवाइयों को रोकने में विफल रही हैं। राष्ट्रपति ने आखिर में न्याय की दिशा में काम करने, इस्लामी एकजुटता को मजबूत करने और एकता के माध्यम से क्षेत्रीय शांति को आगे बढ़ाने के लिए ईरान की प्रतिबद्धता को दोहराया।